



SantDnyaneshwarShikshanSanstha's
Hon. Shri. AnnasahebDangeAyurved Medical College

A/p :Ashta, Tal. : Walwa, Dist :Sangli – 416 301

Phone : 02342-241103/241108, Fax – 02342-241110

Website : www.adamcashta.com

E-mail : ashta.adamc@gmail.com

DEPARTMENT OF KAYACHIKITSA

TEACHING LEARNING PROCESS

PROBLEM SOLVING METHOD

SR.NO	STUDENT CENTRIC METHODS
1	CHIKITSA PROTOCOL
2	


H.O.D.
Kayachikitsa Dept.
A.D.A.M.C., ASHTA

३. कायाचिकित्सा विभाग ३.

चिकित्सा Protocol

1. व्याधी घटक :-

I. दोष :-

II. धातु:-

III. स्रोतस :-

IV. प्रमुख लक्षण :-

2. चिकित्सा सूत्र :-

3. प्रमुख चिकित्सा उपक्रम :- I. शोधन

II. शमन

III. विशिष्ट कर्म

4. चिकित्सा कल्प :-

कल्पाचे नाव	मात्रा	आनुपान	काल	प्रमुख कर्म	व्याधी लक्षण क्षय	व्याधी संप्राप्ती विघटन कर्म

5. पंचकर्म चिकित्सा :-

पंचकर्माचे नाव	औषधी द्रव्याचे नाव	काल	मात्रा	प्रमुख कर्म	व्याधी लक्षण क्षय	व्याधी संप्राप्ती विघटन कर्म

6. रसायन चिकित्सा :-

7. आत्यायिक चिकित्सा :-

8. विशिष्ट चिकित्सा वर्णन (संहिता) :- I. चरक

II. सुश्रुत

III. वागभट

9. पत्यापथ्य :- I. आहारज

II. बिहारज

10. साध्या साध्यत्व :-

अपस्मार चिकित्सा

1) व्याधी घटक :- तड्डे, तड्डे, तड्डे - तड्डे

1) दोष - त्रिदोष

तड्डे, तड्डे, तड्डे - तड्डे, तड्डे, तड्डे

2) दृष्य - स्मृति

3) स्रोतस - मनोवह.

4) प्रमुख लक्षणे - स्मृति विनाश

विभ्रत्स चेष्टा
- तमप्रवेश

2) चिकित्सा सूत्र :- "तेरावृत्तानां तद्वत्स्रोतमनेसां संप्रबोधनम्।
तीक्ष्णैरादौ शिषक् कुर्यात् कर्मवमनादिभिः॥
वातिके बस्तिभ्रुयिष्ठे, पेल्लं प्रायो विरेचने।
अल्लेषिकं वमनप्रार्थे रपस्मारमुपाचरेत्॥

- चं.चि. 10.

3) प्रमुख चिकित्सा उपक्रम :- तड्डे, तड्डे, तड्डे

1) शोधन - बस्ति

विरेचन

वमन

2) शोथमन

घृतपान - पंचगव्य घृत

ब्राम्ही घृत

महापंचगव्य घृत.

अभ्यंग - पल्लंकादि तेल . 1950

धूपन - शुकपित्त + धृत
 अंजन - शुक पित्त

iii) विशिष्ट कर्म - रसायन चिकित्सा
 - धृतपान.

4) चिकित्सा कल्प :-

कल्प	मात्रा	अनुपान	काल	प्रमुख कर्म
महापंचगव्य	5-10 ml	कोष्ठाजल	पश्चात	त्रिदोषनाशक
धृत			भक्त	

ब्राह्मी वटी	250 mg	कोष्ठाजल	पश्चात	भूतघ्न, मेध्य
			भक्त	

सारस्वतारिष्ट	15 ml	समभागजल	पश्चात	स्मृतिवर्धक
			भक्त	मेध्य रसायन.

शर्पगंधाचूर्ण	1 gm	मधु	पश्चात	निद्राजनक
			भक्त	

5) पंचकर्म चिकित्सा :-

कर्म	औषधी द्रव्य	मात्रा	काल
वमन	मदनफल चूर्ण	6-10 gm	सकाळी.
वस्ती	वैतरण	960 ml	पुर्वभक्त (सकाळी)
प्रधमन	पिप्पली	3 मुच्युटी	प्रातःकाल
मस्य	पंचलवण		

6) रसायन चिकित्सा :-
 ब्राम्ही
 मंडुकपर्णी
 शंखपुष्पी.

7) अत्याधिक चिकित्सा :- प्रथमन नस्य.

8) विशिष्ट चिकित्सा वर्णन :-

1) च.चि.१०

घृतपान - पंचगव्य

ब्राम्ही

महापंचगव्य

घृत.

2) सु.संहिता (3.61)

घृतपान - सिद्धार्थक घृत.

सिराव्यधन - उर / अपांग / ललाटप्रदेशातील
 सिरा व्यधन.

- रत्नअचित कुंडलादि धारण.

3) अ.रुदय :-

अपस्मारनाशक घृत प्रयोग

(ब्राम्ही, वचा, कुष्ठ)

9) पथ्यापथ्य :-

पथ्य

आहारज

विहारज

लघु, सुपाच्य

मणिधारण

मधुर रसात्मक आहार

मंगलचरण

मधु

षष्ठीशाली सिद्ध घृत.

अपथ्य - उष्ण, तीक्ष्ण, विदाही, अहित, विरुद्ध आहार.

विहार - वेगधारण.

10) साध्यासाध्यत्व

1) बलमांसकीणता - अचिकित्स्य.

2) सन्निपातिक दुर्बल व्यक्ति - असाध्य.

3) वारंवारवेग, क्षीण नेत्र, श्रुश्रुटी प्रदेशी विकृती } असन्व्यास असाध्य.

अपथ्य - उष्ण, तीक्ष्ण, विदाही, अहित, विरुद्ध आहार.

विहार - वेगधारण.

अपथ्य

विहार

अपथ्य

अपथ्य

अपथ्य

अपथ्य

अपथ्य

अपथ्य

अपथ्य

आमवात

चिकित्सा protocol - जगद (2)

1) व्याधी घटक :-

अभि संघ - जगद - विक व्यधी (2)
 (1) दोष - त्रिदोष

(वातप्रधान क्रम)

2) द्रव्य - घातू - रस , मांस

कंडरा, संधि, स्नायु

3) स्रोतस - रसवह

4) प्रमुख लक्षणे - 1) वृश्चिक दंशवत वेदना (संधीठिकाणी)

2) उज्वरा

3) संचारी वेदनाकारा

4) संधी क्रियाल्पता

2) चिकित्सासूत्र :-

" लंघनं स्वेदनं तिक्तदीपनानि कर्तव्यानि ।

विरेचनं स्नेहपानं वस्त्यञ्चाममारुते ॥

रुक्षं स्वेदो विधातव्यो बालुकापोहलेस्तथा ।
उपनाहाश्च कर्तव्यास्तेऽपि स्नेहविवर्जिता ॥

किं च उपरं शिवा यो रः

3) प्रमुख चिकित्सा उपक्रमः -

1) शोधन - विरेचन
वस्ती

2) शमन - दीपन - पाचन

3) विशिष्ट कर्म - स्नेहपान - पुरंड स्नेह - स्वेदनी - वालुका पीहली. (सक नाडरहाड)

4) चिकित्सा कल्पः-

कल्पाचे नाव त्रिमात्रा, क्रमजनुपान काळ प्रमुख कर्म.

1) 1) सिंहाद 250- कोष्णजल भोजनोत्तर शोधन
गुग्गुळ 500mg (सक सं) शूलघ्न
दीपन-पाचन.

2) रास्ना 15-30 कोष्णजल दिवसातून शोधन
सप्तकास्वाथ त्रिमात्रा 2 वेळा शूलघ्न

3) पुरंडस्नेह 20 ml कोष्ण पढोटे, विरेचन.
क्षीर - सकाळी मीज

5) पंचकर्मचिकित्साः

॥ विरेचनान्तरं पुरंडस्नेहः ॥
॥ शूलघ्नान्तरं सिंहादः ॥

2) सेंधवादी लवण बस्ती

3) वंतरण बस्ती

विरेचनी - सकाळी १
दिवा

6) रसायन चिकित्सा :-

- शुद्धी
- भल्लातक

अत्याधिक चिकित्सा :-

- निद्रोदय रस - 250 mg
- + शूलहर वटी 250 mg.

7) पश्यापथ्य :-

पथ्य - आहार - रुक्ष, लघु,
उष्ण, दीपन-पाचनीय
कुलत्थ, युष, उष्णोदक.

अपथ्य - स्निग्ध, अभिष्यंदी आहार
विरुद्धाशन, विषमाशन,
दिवास्वाप

8) साध्यासाध्यत्व :-

- एकदोषज - साध्य
- द्विदोषज - याप्य
- सर्व शरीरव्यापी } कुच्छ्रसाध्य
शोथयुक्त }
सन्निपातिक }
- हृदय उपद्रवात्मक - कष्टसाध्य
आमवात
- पुराण आमवात - कष्टसाध्य.

9. उन्माद चिकित्सा

व्याधी द्रवक -

दोष - शारिरीक दोष - त्रिदोषज

पित्त - साध्यक

कफ - तर्पक

वात - उदान

मानसिक दोष - राजस, तामस

इष्ट - रस

अग्नि - जातराग्नि, धात्वाग्नि, भूताग्नि

स्रोतस - मनोवह

स्रोतोदुष्टी - रोग, अतिप्रवृत्ति विमावगिमन

उद्भवस्थान - हृदय

अधिष्ठान - मानस, बुद्धि

रोगमार्ग - मध्यम

प्रमुख लक्षण :-

बुद्धी विक्रम होणे (मूढचेता)

हृत् अस्थिर होणे

धीविक्रम - धैर्य नसणे

अबुद्धवाक्यत्व - सुबुद्ध वाक्ये बोधू न शकणे

सत्वपिरिप्लव, हृदयबुद्ध्यता

स्मृतिबुद्धि संजाक्रम

नाचारधर्मा

प्रकार -

1) वातज

2) पित्तज

3) कफज

4) सन्निपातज

5) आगन्तूज तथा भूतोन्माद

चिकित्सासूत्र -

उन्मादे वातजे पूर्वं स्नेहपानं विशेषवित् ।
कुलदावृत्त मार्गे तु सस्नेहं मृदुशोथनम् ॥

च.चि. 9/25

a) शोथन -

- i) वमन
- ii) विरेचन } तीक्ष्ण
- iii) आस्थापन वास्ते
- iv) अनुवासन वास्ते
- v) नस्य (अवपीड)

दोष प्राधान्य व रुग्णास्थिती अनुसार चिकित्सासूत्रांश वापर करावा. वातज उन्माद असल्यास प्रथमतः स्नेहपान करावे. कफज पित्तज उन्मादांमध्ये अनुक्रमे वमन विरेचन उपक्रम करावेत.

कफ पित्ताश्वादे मार्गविरोध असल्यास मृदु संशोथन करावे.

b) शामन -

- i) धूम
- ii) अंजन
- iii) वेप
- iv) विस्मरण
- v) उपवास
- vi) शिरावेध
- vii) शिरोवरती
- viii) शिरोविरेचन

c) विशिष्ट चिकित्सा -

उन्माद रोग्यास्य चा नाडन / प्राशन चिकित्सा

च.चि. 9/30-32

सन्वावजय
देवव्यपात्रय

चिकित्साकथ्य -

कथ्य	मात्रा	अनुपात	काय	प्रमुख कर्म	व्यक्त्य क्षय
कल्याणक धृत	20 ml	उष्णजल	प्रातःकाळी	वायुव्यवर्धक	प्रेतभूत राक्षस या प्रभाव नष्ट करणे ग्रहांचा प्रभाव नष्ट
महापैशाचिक धृत	20 ml	कोष्णजल	प्रातःकाळी	बुद्धिवर्धक स्मृतिप्रद अमृताप्रमाणे बुणकारी	ज्वर, उन्माद ग्रहबाधा इश करते
पुराणधृत	20 ml	कोष्णजल	प्रातःकाळी	त्रिदोषनाशक	भूतब्रह्मजन्म उन्माद नष्ट
नरुण				विरिषवीज , जेठमद्य , लव्हकन , तगर , कटा + अजामूत्रानक	
जटामांसी धूर्वा	3-6 gm	काण्टरुपात	सायंकाळी	निद्राजनन	निशानाश इश करते
ब्राम्हीवली	250 कुन्गु gm	कोष्णजल	भीजनोत्तर	बुद्धिवर्धक स्मृतिवर्धक	बुद्धिभंग स्मृतिनाश
भारस्वतारिष्ट	20 ml	समभावा जल	भीजनोत्तर	मनोवह स्रोतस बुद्धिवर्धक	

पंचकर्म चिकित्सा -

कर्म - वमन ३- हांच्या योगाने कर्कराज्येन्द्रिये खिर कोष्ठ शुद्ध
 विरेचन १) शाल्यावर मन प्रसन्न होणे, स्मरणशक्ती वाढ
 विवेकशील

नस्य - शिरीषबीज मधुक लिंग वरुण तगर कच्चा
 + अजा मूत्रान वादन

अंजन - त्रिकटु हरिद्रा, दारुहरिद्रा मंजिष्ठा लिंग सर्षप
 + अजामूत्रान वादन

॥
 सिद्धार्थिक अंगद

वेप, स्नान, पान, उर्ध्वतनासाठी उपयुक्त

5) शिरावेद्य - उन्माद, विषमज्वर आणि अपस्मार रोगाने शाल्यकर्म
 विद चिकित्सकाने शाल्यप्रदेश आणि केशाने शाल्याचे
 संधीमध्ये असलेल्या शिरांचे वेद्यन करावे.

6) धृत + मांससेवन - पूरण धृत + मांससेवन - बुद्धिविभ्रंश व
 स्मृतिविभ्रंश इर होतो.

१) शिरीषवस्ती

२) शिरोपिचु

रसायन चिकित्सा - जलमांसी शाली गुडची लण्ठीमद्यु

दैवव्यपात्रय चिकित्सा - लंघन होम मंत्रादि चिकित्सा

सन्धावजय चिकित्सा - आश्वासन एवं लामप्रद प्रियवतान्यापश्वा
 रोगाच्या मनात सन्ध पुन्हा जावून करणे.

पह्यापह्य :-

पह्य - प्राणायाम, ध्यान

धृत, मांससेवन

10] अपस्मार चिकित्सा

स्मृतेश्चगमं प्रादुरपस्मारं भिषग्विदः ।

तमः प्रवेशा वीभत्सचेष्टां धीसत्वसम्बवात् ॥

च. चि. 10/3

या रोगात स्मृतिचा नाश होतो, त्यामुळे रोग्याच्या मना व बुद्धी मध्ये विभ्रम निर्माण होतो, त्यामुळे तो विभ्रत्स चेष्टा करू लागतो, त्याच्या डोक्यासमोर अंठारी येते

व्याधीघटक - दोष - शारिरीक, मानसिक (रज, तमस)
 वात - व्यान, प्राण, उदान
 पित्त - साद्यक
 इण्ड - स्मृती (प्रानसामान्य)
 अशिष्ठान - कृष्य (मस्तिष्क)
 संभाव्य स्रोतस

प्रमुख लक्षणे

- तमः प्रवेशा
 वीभत्सचेष्टा
 धीसत्वसम्बवात्
 भ्रिष्ठाक्षिभ्रः स्राव
 हस्तपादौ च विक्षिप्त
 दोषांचा वेग कमी झाल्यावर रोग्यास बुद्धी येते

चिकित्सा सूत्र -

“ तैरावृत्तानां लक्ष्णोभनसां संप्रबोधनम् ।
 तीक्ष्णोशदौ भिषक् कुलट्टि कर्मभिरवमनादिभिः ॥
 वातिकं वस्तिभ्रयिष्ठैः पैहं प्रायो विरेचनैः ।
 क्वेषिकं वमनप्राणैरपस्मारमुपाचरेत् ॥”

च. चि. 10/15

i) शोथन - वातज - वास्ति
 पित्त - विरेचन
 कफ - वमन
 नस्य - स्नेहन - त्रिकणादि नैत्र नस्य
 प्रथमन - पिंपकी + कुष्ठ + लवण भारंगी-चूर्ण

ii) शामन : उद्वर्तन - नुकसी + हरितकी + जलामांसी + चोरपुष्पी
 ही द्रव्ये गोमूत्रात् वादन → उद्वर्तन
 च. सि. 10

धूपन - पिंपकी + सैणव + टिंग + काकोली + पीतसर्षप
 + रक्तचंदन धान्ये चूर्ण + बक-चण्ड्या मूत्रान्
 वादन धूसी देणे.

अभ्रयंग - कटभ्यादि नैत्र
 गोमूत्र
 गोमय
 पत्रकषादि नैत्र

वर्ती - कायस्थादि वर्ती
 मुस्तादि वर्ती

अंजन - पुण्ड्र नक्षत्रावर कुष्ठचे पित्त

iii) विशिष्ट कर्म -

- . आश्वासन चिकित्सा
- . रसायन चिकित्सा

. उपरस्मार पिडित व्यक्तीस आग्नि, पाणी वगैरे
 भितीच्या प्रकारापासून इरे देवणे.

चिकित्सा कवच -

कवच	मात्रा	अनुपान	काव	प्रमुख कर्म	लक्षण क्षय
पंचगव्य दूत	20 ml	कोष्ठा जल	भीजनापूर्वी सकाळी	अमृताप्रमाणे	ब्रह्मवाद्याद शेवा; अपस्म नाशक
श्राम्ही दूत	10-20 ml	कोष्ठा जल		दुग्धे स्मृति वर्धक	अपस्मार उन्माद
जीवनीय थसक	10 ml	कोष्ठा जल		स्मृतिवर्धक	अपस्मार नाशक
कचदी दूत	10 ml	कोष्ठा जल		स्मृतिदुग्धे वर्धक	वातकफजन अपस्मारनाशक
पंचकर्म चिकित्सा :-					
कपित्वा गार्ष्टे मूत्र - नस्य	5-6 खेंव	गोमूत्रान वाइन	सकाळी	अपस्मार विनाशक	
त्रिकव्यादि नस्य	4-5 खेंव	शुभामूत्रान वाइन		अपस्मारनाशक	
वास्ति	दशामूक सिद्ध निरुठ वास्ति	यथायोग्य 120 ml		अभुक्त	वातशमन
वमन	धामागविस्दिष्ट इष्ट	यथायोग्य आकंठपान		प्रातःकाव	मानसशोभाकर ब्रह्मवाद्यानाशक
विरेचन	त्रिवृ-नावत्येक	यथायोग्य (30-40 ml)		सूर्योदयानंतर	वातपित्तनाशक

रसायन चिकित्सा -

वा. उ. 7/24

1) ब्राम्ही रस, वेखंड, कोण्ड, शंखपुष्पी सिद्ध पुराण धृत सेवन

2) एक एक प्रस्थ रूप, तैल + जीवनीय औषधे 4 तोके

↓
दुग्धसिद्ध

3) ब्राम्ही तथा शंखपुष्पी गूडची ज्योतिष्मती शनावरी जलामांसी

4) पंचगव्य दूध + ब्राम्ही स्वरस

* दैव्यपात्रेण - यज्ज, ठोम, वानि, मंत्र आदि

* सत्वावजय चिकित्सा

योगासन प्राकृतिक चिकित्सा -

शीतसन शवासन ध्यान
भुजंगासन प्राणायाम

विशिष्ट चिकित्सा :-

पुस्तक - वातज - कुलथ, यव, कोथ, शण्डीज, पत्रकप, पंचसूते
क्वाथ + 1/4 सर्पि + 1/4 अजामूत्र

↓
नेत्रपान, अभ्यंग

पित्तज - काकोलादि गणानीय द्रव्ये + तैल + विडंगादि
गण द्रव्ये + रूप

↓
इष्ट + मष्ट + साखर

ककज - आश्वथादि गणानीत्य इत्ये + 1/4th रूप + अपटमजे

सिद्धार्थक धृत - सर्वभूतग्रहोन्मादनस्यस्मारंश्च नाशयेत् ।

औषधी सिद्ध मद्य -

तीन दिवस उपाशी इक्कर

↓
भारंगीया पाक + इथात + साळी लांडूळ खीर करावी

↓
विषमृत इक्कर

↓
इक्करात्वा मारुन त्याच्या पोटातून ते अन्न
काढून बाहेरून त्याचे चूर्ण करावे .

↓
संधान होव्यासाठी

↓
पिपती धृतत्वित्त मडक्यास ते चूर्ण + भारंगी क्वाथ

↓
शुद्ध होईपर्यंत ठेवावे .

↓
मद्यपान - अपस्मारपीडितास

तैलयोग (बहिःपरिमार्जन) - कटुभ्यादि तैल
पुष्पकषदि तैल

सिरावेष्ट - हनुसंधीमधील सिरावेष्ट

“पुराण सपिचः पानमभ्यंगश्चैव प्रमितः ।”

शु. 3.81/122

पुराणधृत - पान
अभ्यंग

दैवलयपात्रय चिकित्सा - इद्राची पूजा.

वाग्भट - धूमपान - मुंगूस , धुवड , मांजर , गिद्याउ , किडे , सर्प चांची तोंडे , पिसे व मूठ यांचा धूर द्यावा.

रसायन चिकित्सा - महामर्मस्त्रित असल्याने

कपित्वा गाईच्या पित्ताने नस्य

पथ्यापथ्य -

पथ्य - आठार - पुराण शांति , मूगडाक , शीवगा , गोडुव्य , पुराणधृत कळे देणे.

विहार - शोथन , अंजन , नस्य , धूमपान

अपथ्य - अपस्मार झालेल्या रोग्यास पाणी व अग्निपात्रून इर ठेवावे . मनोत्कलेश इर करण्यासाठी प्रयत्न करावेत .

* आचार्यानुसार 12, 15 दिवस , 1 महिना या अन्य कोठल्याही निश्चितवेळी जेव्हा दोष प्रकुपित होतात . तेव्हा अपस्माराने वेग येतात .

दोषांचा संचय काळ हाच त्यांच्या वेगांची वीव्रता निश्चिन्न करतो -

वातिक	12 दिवस
पित्तज	15 दिवसा
कफज	1 महिना

NAME:- Kandhae Dnyaneshwari PaEashuEam

Roll NO:- 29

① गुल्म

१] व्याधी घटक -

1. दोष - त्रिदोष प्रामुख्याने वात
2. द्रव्य - निराश्रय
3. धातु -
4. स्रोतस - महास्रोतस [आमाशय आणि पक्वाशय]
5. अधिष्ठान - उदर, पार्श्व, हृदय, नासि, वस्ति
6. प्रमुखलक्षणो -

- अरुचि
- मल, मुत्र यांची सकळ प्रवृत्ति
- आंत्रकुजन
- आनाह
- उदगार वाहुल्य
- कुंठ - मुख शुष्कता
- शरीरवर्ण श्याव, कृष्ण व असृण
- हल्लास
- काम

२] चिकित्सासुत्र :-

स्नेहपानं हितं गुल्मे विशेषेणोर्ध्वनासिजे ।
पक्वाशयगते वस्तिरुक्षयं जठराश्रये ॥

अर्थ - कोणताही गुल्म असला तरी त्यात स्नेहपानच
लाभदायक ठरते. पण गुल्म जेव्हा नासिआ वरच्या
आगात उत्पन्न झालेला असेल तेव्हा स्नेहपान
विशेषत्वाने हितकर होते.

पक्वाशयात गुल्म → वस्तीचा प्रयोग उत्तम
गुल्म संपूर्ण उदरप्रदेशी व्याप्त → स्नेहपान + वस्ती

३) प्रमुख चिकित्सा उपक्रम :-

१. शोधन -

स्नेहन - स्निग्ध भोजन, अश्वयंग, स्नेहपान
स्वेदन
वस्ति
वसन
विरेचन
रक्तमोक्षण

२. शमन -

वृद्धण - वातज गुल्म
लंघन - कफज गुल्म
अश्वयंग - पित्तज गुल्म
पथ्य

३. विशिष्ट कर्म -

शस्त्रकर्म → रक्त व पित्त वृद्धी, विदाही गुल्म

क्षारकर्म आणि अग्निकर्म → कफज गुल्म

दाहकर्म

योग -

घृत - पित्तज - त्रायसाणादि, वासादि
कुफज - श्लेष्मातकादि, पंचकोलादि.

शिलाजतु प्रयोग - लघुपंचसुख क्वाथ + जवसगर
+ शिलाजतु

एरंडतैल -

सुरा संड + एरंड तैल → वातज गुल्म कुफ अनुबंध
क्षीर + एरंडतैल → वातज गुल्म पित्त अनुबंध

4) चिकित्सा कुल्प -

① दंती हरितकी अवलेह - 60 gm - हिरडा / सांसरसासोवत
(1 पल) श्नात → विरेचन

② लशुनादिवटी - कोष्णजल

③ हिंवाष्कचुर्ण / गुटिका - कोष्णजल - जेवणापूर्वी

④ लशुनक्षीर - 1/2 पल

5) पंचकर्म चिकित्सा -

① स्नेहन - श्लेष्मादि घृत, घटपलघृत, पिप्पल्यादि घृत - स्नेहपान, अश्वत्थ

② स्वेदन

③ वमन - कुफनिर्हरण

④ विरेचन - स्नेहयुक्त अनुलोमक द्रव्य - पित्ताचा क्षय
(तिलवक घृत)

⑤ रक्तमोक्षण - रक्ताचा विदाह, तृष्णा, दाह पाक कुमी होते.

⑥ वस्ती - दशमुष्णक्वाथ + एरण्ड स्नेह → शोधन

6) पथ्यापथ्य -

① बृहणिकुर, सिग्ध, उष्ण अन्न

② स्नेहपान

③ दुग्धपान, घृत

④ जुने तांदूळ

⑤ जांगल मांस

⑥ सुहयुक्त सुदृग युष

⑦ मांसरस + श्रात

साह्यासाध्यत्व १-

1. क्रमशः वाढत जाउन सर्व उदरप्रदेश व्यापुन टाकुतो .
2. ड्यावर सिराजाल दिसते .
3. ड्याचा पृष्ठभाग कुसवाच्या पाठिप्रमाणे खडबडीत जावतो
4. दुर्बल रोगी .
5. अरुचि, हल्लास, हर्दि, कुस, अशति, ड्वर, तंन्दा, प्रतिशय
6. हातापायावर सुज, श्वास

वरील लक्षणांनी रुग्ण व्याप्त असेल तर तो असाध्य समजावा.

② रक्तपित्त

१] व्याधीघटक :-

① दोष - पित्त

② धातु / दुष्य - रक्त

③ स्रोतस - रक्तवह स्रोतस

④ अधिष्ठान - उर्ध्वमार्ग

अधोमार्ग

व्यापक - समस्त रोमकुप व उर्ध्वमार्ग

③ प्रमुख लक्षणो -

1. वाह्य स्रोतसातून रक्तस्राव होणे

2. दोर्बल्य, श्वास, हृत्पीडा.

3. पाण्डुता, ड्वर, तृष्णा

4. कुफज - सांद्र, स्नेहयुक्त पिच्छिल स्राव

5. पित्तज - काष्ठा, चिकट, गोमूत्रवर्णीस्राव

6. वातज - श्याव, अरुण, फेनयुक्त

२] चिकित्सा सूत्र :-

" अक्षीणबल सांसस्य रक्तपित्तं यदर्शनतः ।

तद्दोषदुष्टमुक्लिष्टनादौ स्तम्भनमर्हति ॥ "

[च.चि ५॥

इया रक्तपित्ताच्या रोग्याचे बल आणि सांस क्षीण नसेल तो योग्य प्रकारे झोजन करित असेल तर त्याच दोष प्रकोपाने दुष्ट आणि वाहेर पडव्यास प्रवृत्त रक्तपित्ताला चिकित्सेच्या सुरुवातीलाच अडविठ्याचा प्रयत्न करूनये

3) प्रमुख चिकित्सा उपक्रम :-

शोधन -

उर्ध्वग - विरेचन
अधोग - वमन

शमन - लंघन

तर्पण → दांडिम आमलकि सिद्ध

उर्ध्वग - फलरसांचे तर्पण, खजुरादि
अधोग - पेया

औषधे → तिक्त, कुषाय रस, शीतवीर्य, रक्तस्थंबक

4) चिकित्सा कुल्प :-

रक्तबोध

नागकेशर

बोलपर्पटी

बोल्बद्ध रस - 250 mg

नासागत रक्ताप्लव → सुदुविरेचन → शमन → नस्य
नस्य द्रव्य - पद्मकादितैल / दुर्वास्वरस

मुखातुन रक्तस्राव -

लाक्षा पुर्ण + गोदंती पिष्टी → वासावलेहासोबत वारंवार

(250 mg)

(500 mg)

• छर्दीद्वारे रक्त पडत असल्यास

पद्मकादितैल → 2 चमचे

सुतशेखर + शंख भस्म - 250 mg वारंवार

• गुदगत रक्तपित्त

नागवेशर + बोलबद्ध रस

(1 gm)

(250 mg)

• मूत्रमागद्वारे रक्तपित्त

गोक्षुरादि गुग्गुळ

• योनिमागनि रक्तपित्त

बोलपर्पटी, बोलबद्ध रस

5) व्याधीसंप्राप्ती विद्यतः :-

वासाघृत - रक्तस्थंभन → रक्तस्राव कुमी

शतावरीघृत - पित्तक्षय → पित्त + रक्तदुष्टी क्षय → रक्तपित्त क्षय

पंचकर्म चिकित्सा

विरेचन → उर्ध्वग रक्तपित्त

निशोत्तर, हिरडा, व्हावा मगज, आवळा खरस
+ मध + साखर → 10-15 ml

वमन → अधोग रक्तपित्त

सदनफल + सल्लु + मध + साखर

अभ्यंग

परिषेका अवगाह

नासागत रक्तपित्त → नस्य - दुधाने मस्य /
आरुषादि क्वाथाने

योनिमार्गाने रक्तपित्त → उत्तरवास्ति → क्वाल्बद्धरसाने

शरसायन चिकित्सा :-

1. प्रवाल शस्म

शुपथ्यापथ्य ३-

शीत स्पर्श
समोअनुकूल विहार

आहार -

जीर्वा शालिषष्टिक, सुग.ससुर, युष
सांसरस, - पारवा, कुन्तुर - वातानुबंघात
पटोल, दाडिम, आमलकी

अपथ्य -

व्यायाम
वेगविधारण
आतपसेवन
धूमपान

शुसाह्यासाध्यत्व ३-

1. उर्ध्वग - साध्य
2. अधोग - याप्त
3. तिर्यक् - असाध्य

पाण्डु

दोष - पित्तप्रधान त्रिदोष प्रकोप

दुष्य - रस, रक्त, त्वचा, मांस

स्रोतस - रसवह, रक्तवह

स्रोतोदुष्टी - संग

अधिष्ठान - सर्व शरीरागत त्वचा

आशय - आमाशयोत्थ

अग्नि - धात्वाग्निमांश

व्याधीक्षमत्व - चिरकारी

साध्यसाध्यत्व - साध्य

प्रमुख लक्षण

अधिकृत शोथ

रक्ताल्पता

निःसारता

पिंडिकोष्ठिवन

दुर्बलता

अरुचि, अग्निमांश

श्वास, ज्वर

अतिनिद्रा

अल्पवाक्

चिकित्सासूत्र

"तत्र वातिके स्नेहभूयिष्ठं पित्तिके तिक्तशीतलम्
श्लेष्मिक कटुतिक्तोष्णं विमिश्रं सान्निपातिके।"

संशोधन - निदानपरिवर्जन
 अभ्यंतर र्नेहन
 तीक्ष्ण संशोधन
 बस्ति (रक्तबस्ति) - अजा रक्त

संशामन चिकित्सा

वातज पाण्डू - र्नेहन (अभ्यन्तर)
 पित्तज पाण्डू - तिक्त रस, शीतवीर्य
 कफज पाण्डू - कटु, तिक्त रस, उष्णवीर्य
 श्लिष्मिपातिज - विभिन्न चिकित्सा
 मृदुभक्षणजन्य - निदान परिवर्जन, कृमि चिकित्सा

चिकित्सा कल्प

कल्पानि नाव	मात्रा	अनुपान	काल
१) पुनर्नवा मण्डूर	125-250 mg	मधु	जेवणानंतर
२) नवाथस लोह	125-250 mg	घृत	जेवणानंतर
३) आरोग्यवर्धनी बरी	250-500 mg	घृत	जेवणानंतर
४) त्रिकला घृत	10-20 ml	जलोदक	जेवणानंतर
५) आमलकी चूर्ण	१-6 gm	जल	जेवणानंतर

पंचकर्म चिकित्सा

पंचकर्म नाव	औषधी द्रव्य नाम	मात्रा	अनुपात
1) स्नेहन	दाडिम घृत कव्याणक घृत	10-20ml 10-20ml	उष्णोदक उष्णोदक
2) तीक्ष्ण वमन	भदनफल यस्तीमधु, इक्षु	60ml	उष्णोदक
3) तीक्ष्ण विरैचन	जौमूत्र त्रिकृत, द्राक्षा	60ml	उष्णोदक

रसायन चिकित्सा

कुमारी
गुडूची

विशिष्ट चिकित्सा वर्णन

चरक - 1) मृदुभक्षणजन्य पाण्डु
2) तीक्ष्ण संशोधन

सुश्रुत - 1) कामला हा पाण्डुचा उपद्रव

वाग्भट - पाण्डुशिवाय स्वतंत्रपणे कामला होऊ शकतो

पश्यापश्य

पश्य :-

आहार

यव , शाली , तादुण्ड , मूग , मसूर , हरिद्रा , घृत , शुण्ठी

विहार

प्रसन्नचित्त

मृदु विरचन

अपश्य

आहार

उडीक , तिल , हिंगु , अतिजलपान इ

विहार

आतपसेवन

दिवास्वाप

आयाम

वेगविधारण

साध्यसाध्यत्व

साध्य , कृच्छ्रसाध्य

व्याधी घटक

दोष - वात

दूष्य - आप धातु, पुरीष

स्त्रोतस - महास्त्रोतस

प्रमुख लक्षण - बहुप्रवसरण
अनियंत्रित मलप्रवृत्ति

चिकित्सासूत्र

न तु संग्रहणं देयं पूर्वमामातिसारिणे
विक्षयमानाः प्राग्दोषा जनयन्त्यामथान् बहुन् ॥ च. वि

प्रमुख चिकित्सा

शमन - आमावस्था - लंघन - दीपन + पाचन + ग्राही
पक्वावस्था - स्तम्भन

शोधन - मलावष्टम्भ - हरीतकी योग

विशिष्ट कर्म

आमातिसार - पिच्छा बस्ती (पित्तज अतिसार)
(मोचरस)

चिकित्सा कल्प

नाव	मात्रा	अनुपात	कारक	फलश्रुति
1) चांगेरी घृत	10 gm	उष्ण जल	अपानो	वातज अतिसार

रसाजनादी
चूर्ण

2gms

मधुन शुण्ठी
चूर्ण

अपानो

कफ

पंचकर्म चिकित्सा

नाव	औषधी द्रव्य	मात्रा	काल	फलश्रुत
1) अनुवासन बस्ती	क्या घृत चित्रक घृत	60ml	व्यानो	वातज अतिसा
2) गुद पिचू	तिळ तैल सिद्ध घृत	पिचूना लागेल नेवदे	व्यानो	वातज अतिसा
3) पिच्छा बस्ती	मोचरस	540ml	प्रात काळ	पित्तज अतिसा

रसायन

1) गुडूची सिद्धक्षीर

आत्यधिक चिकित्सा

रसक्षय - 1) लाजामंड
2) खजूरमंथ
3) मुस्ता सिद्ध जल

मूत्राघात - नारिकेल तैल

पश्यापथ्य

पथ्य

आहार

लघु आहार

लाजामंड

खर्जुर मंथ

तेक

दाडिम स्वरस

उष्णोदक

अपथ्य

गुरु आहार

विकारी अन्न

मद्यपान

व्यायाम

चंक्रमण

साध्यासाध्यत्व

साध्य

भवीन / एक लक्षणयुक्त / अल्प लक्षण युक्त

अपद्रव रहित

कष्टसाध्य

धातुक्षय

एकापेक्षा जास्त लक्षणे

असाध्य

सर्व लक्षणे युक्त

अपद्रव युक्त